Class - B.A. (H) - VI th sem.

sub. - Macro Economics

Teacher - Dr. Dharmendra Singh

Topic's - Value of Money

Unit No. - 2

24.4.2020 — मुद्रा का मूल्य (आशय) एवं अवधारणाएँ (वस्तुएवं राजकीय)

25.4.2020 — फिशर का मुद्रा परिमाण सिद्धांत

26.4.2020 — फिशर का मुद्रा परिमाण सिद्धांत (निरंतर)

27.4.2020 — केम्ब्रिज का मुद्रा परिमाण सिद्धांत

28.4.2020 — फिशर एवं केम्ब्रिज के सिद्धांत का तुलनात्मक विवेचन

29.4.2020 — मुद्रा मूल्य के अन्य सिद्धांत

30.4.2020 — मिल्टन फ्रीडमैन का मुद्रा परिमाण सिद्धांत

25

मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त
[QUANTITY THEORY OF MONEY]

मौद्रिक सिद्धान्त का सम्बन्ध राष्ट्रीय आय, रोजगार तथा सामान्य कीमत स्तर जैसे महत्वपूर्ण आर्थिक चरों के निर्धारण में मुद्रा की भूमिका से है, लेकिन समकालीन मौद्रिक सिद्धान्त आर्थिक विश्लेषण की एक शाखा है जो विवादों से घिरा है।

इस अध्याय में मुद्रा के मूल्य के निर्धारण के सम्बन्ध में मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त का विश्लेषण किया गया है।

मुद्रा के मूल्य निर्धारण सम्बन्धी विभिन्न सिद्धान्त
(DIFFERENT THEORIES OF DETERMINATION OF MONEY VALUE)

मुद्रा के मूल्य-निर्धारण सम्बन्धी अनेक सिद्धान्त हैं जिनका विवरण नीचे दिया जा रहा है :

मुद्रा के मूल्य के निर्धारण सम्बन्धी सिद्धान्त

(I) मुद्रा का वस्तु सिद्धान्त
(II) मुद्रा का राजकीय सिद्धान्त
(III) मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त

(IV) लेनदेन समीकरण (फिशर)
(V) नकद शेष समीकरण (कैम्ब्रिज)
(VI) परिमाण सिद्धान्त का पुनर्कथन (फ्रीडमैन)

मुद्रा का वस्तु सिद्धान्त
(COMMODITY THEORY OF MONEY)

मुद्रा का वस्तु सिद्धान्त क्या है? (What is the Commodity Theory of Money?)

मुद्रा के वस्तु सिद्धान्त की मान्यता यह है कि मुद्रा भी अन्य वस्तुओं की भांति एक वस्तु है और उसका मूल्य साधारण मांग और पूर्ति के द्वारा निर्धारित होता है। परन्तु यह समझ लेना आवश्यक है कि यहां मांग से तात्पर्य मुद्रा जिस वस्तु से बनी है उस वस्तु की मांग से है। यदि मुद्रा स्वर्ण से निर्मित है, तो उसका मूल्य खोदकर निकालने के लागत-मूल्य पर निर्भर होगा। स्पष्ट है कि **मुद्रा-मूल्य का यह सिद्धान्त मुद्रा के प्राचीन रूप** (ancient form) पर आधारित है जबकि मुद्रा **'वस्तु मुद्रा' के रूप में प्रचलित थी।**

वस्तु सिद्धान्त का वर्तमान महत्व (Present Importance of the Commodity Theory)

वर्तमान युग में प्रायः सभी देशों में अपरिवर्तनशील पत्र मुद्रा चलन में है। अतः स्पष्ट है कि आधुनिक मुद्रा का मूल्य उसमें निहित वस्तु (कागज) के मूल्य से प्रभावित नहीं हो सकता। जिन देशों में धातु मुद्रा (मुख्य सिक्के) चलन में हैं वहां भी अधिकतर प्रधान मुद्रा सांकेतिक ही है, अतः वहां भी धातु-मूल्य का मुद्रा के मूल्य पर कोई प्रभाव नहीं है। **निष्कर्ष रूप** में यह कहा जा सकता है कि **आधुनिक काल में वस्तु सिद्धान्त का मूल्य निर्धारण में कोई महत्व नहीं है** क्योंकि न केवल आदर्श अथवा मानक वस्तु का युग समाप्त हो गया है बल्कि मुद्रा व्यवस्थाओं में स्वर्ण-निधि रखने की परम्परा समाप्त होती जा रही है।

मुद्रा का राजकीय सिद्धान्त
(STATE THEORY OF MONEY)

सिद्धान्त से आशय (Meaning of the Theory)

अर्थशास्त्रियों के एक वर्ग का विश्वास है कि मुद्रा का मूल्य सरकार द्वारा निर्धारित होता है। इस सिद्धान्त के प्रवर्तक **फ्रेड्रिक नैप** (Fredrick Knapp) के अनुसार, "**चलन मुद्रा की आत्मा उसकी इकाइयों में प्रयुक्त किए गए पदार्थ में नहीं बल्कि उन वैधानिक अध्यादेशों में है जो इसके प्रयोग का नियमन करते हैं।**" इस सम्बन्ध में कहा गया है कि आधुनिक काल में मुद्रा के निर्गमन, नियमन तथा मात्रा निर्धारण, आदि का कार्य सरकार करती है और शासकीय सत्ता की स्वीकृति के कारण ही उसे जनता निःसंकोच व्यवहार में लाती है। इतना ही नहीं, सरकार कभी-कभी मूल्य निर्धारण व्यवस्था के अधीन विभिन्न वस्तुओं के मूल्य भी निर्धारित कर देती है। संक्षेप में, **सरकार निम्न प्रकार से मुद्रा के मूल्य को प्रभावित करती है :**

(1) **वैधानिक मान्यता** (Legal recognition)—सरकार वैधानिक मान्यता के बल पर जनता का मुद्रा में विश्वास उत्पन्न करती है। इस वैधानिकता तथा विश्वास के कारण ही मुद्रा समस्त लेन-देन का माध्यम बनी हुई है।

(2) **वस्तु-मूल्य का निर्धारण** (Determination of Prices)—कभी-कभी वस्तुओं के मूल्य निर्धारण द्वारा (नियन्त्रण तथा राशन-व्यवस्था में) सरकार प्रत्यक्ष रूप में मुद्रा का मूल्य निश्चित कर देती है।

(3) **मात्रा में परिवर्तन** (Changes in supply)—सरकार एक निश्चित नीति के अनुसार मुद्रा की चलन मात्रा में परिवर्तन करती है और इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप में उसके मूल्य को प्रभावित करती है।

सिद्धान्त की कमियां (Shortcomings of the Theory)

(1) **जन विश्वास को बढ़ाने सम्बन्धी तर्क में पर्याप्त बल नहीं** (Public Confidence Argument not very convincing)—उपर्युक्त तर्कों में पर्याप्त शक्ति तो है परन्तु सम्पूर्ण सत्यता नहीं है। स्वभावतः जनता स्वेच्छा से मुद्रा को स्वीकार करती है। सरकार उसकी इच्छा को प्रभावित तो कर सकती है परन्तु मुद्रा स्वीकार करने के लिए जनता को विवश नहीं कर सकती।

(2) **मूल्य निर्धारण का सीमित प्रभाव** (Limited effect of Price Control)—वस्तुओं के मूल्य नियन्त्रण द्वारा भी मुद्रा का मूल्य निर्धारण करना सम्भव नहीं है, क्योंकि मूल्य-नियन्त्रण व्यवस्था (price control) में प्रायः मुख्य वस्तुओं के मूल्य ही निर्धारित किए जाते हैं और अनेक वस्तुओं का लेन-देन सामान्य नियमों के अनुसार होता है। अतः मुद्रा के मूल्यों को सरकार केवल कुछ अंशों तक ही प्रभावित कर सकती है।

(3) **मुद्रा-मूल्य का निर्धारण करने में सरकार एक माध्यम मात्र होना** (The State is a medium only in fixation of money-value)—निःसन्देह मुद्रा की मात्रा में कमी अथवा वृद्धि द्वारा मुद्रा के मूल्य में क्रमशः वृद्धि अथवा कमी की जा सकती है परन्तु यह तथ्य तो केवल इस बात की ओर संकेत करता है कि मुद्रा के मूल्य पर उसकी मात्रा का प्रभाव पड़ता है। **इस दृष्टि से सरकार तो केवल माध्यम मात्र हुई। मूल्य का निर्धारण अथवा परिवर्तन मुद्रा की मात्रा से हुआ।**

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि **सरकार ने अनेक क्रियाओं के द्वारा मुद्रा के मूल्य को प्रभावित किया है परन्तु उसका निर्धारण करना सर्वथा अन्य तत्वों के हाथों में है।**

मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त
(QUANTITY THEORY OF MONEY)

मुद्रा का मूल्य—मुद्रा एक ऐसा पदार्थ है जिसमें सब वस्तुओं तथा सेवाओं के मूल्य नापे जाते हैं। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि मुद्रा के मूल्य से आशय वस्तुओं और सेवाओं की उस मात्रा से है जो किसी एक निश्चित समय पर मुद्रा की एक इकाई द्वारा प्राप्त की जा सकती हैं। **कीन्स** (Keynes) के शब्दों में, "मुद्रा की क्रय-शक्ति किसी विशेष स्थिति में वस्तुओं और सेवाओं की उस मात्रा पर आधारित होती है जो मुद्रा की एक इकाई खरीद सकती है।"

मुद्रा के मूल्य में यह परिवर्तन क्यों होते हैं, इसका उत्तर एक सिद्धान्त द्वारा दिया गया है जिसे मुद्रा परिमाण सिद्धान्त कहते हैं।

मुद्रा परिमाण सिद्धान्त बहुत पुराना है क्योंकि इसका विवेचन **जीन बोडिन** (Jean Bodin—1530-1596) द्वारा किया गया था। कुछ अर्थशास्त्रियों का विचार है कि 15वीं सदी में इटली के विचारक **डवन ज़ी** (Davan Zatti) ने इस सिद्धान्त को जन्म दिया। किन्तु इस सिद्धान्त की क्रमबद्ध व्याख्या अंग्रेज विचारक **जॉन लॉक** (John Locke) ने 1691 में की। इसके बाद इस सिद्धान्त में समय-समय पर संशोधन किए गए। 1752 में **डेविड ह्यूम** (David Hume) ने इस सिद्धान्त की व्याख्या की। ह्यूम के बाद प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों में **स्मिथ, रिकार्डो, जे. एस. मिल**, आदि अर्थशास्त्रियों ने इस सिद्धान्त के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किए। आधुनिक अर्थशास्त्रियों में **फिशर** ने इस सिद्धान्त को एक समीकरण का रूप प्रदान कर प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों के मत का समर्थन किया। इसके बाद **पीगू** और **मिल्टन फ्रीडमैन** ने इस सिद्धान्त की नवीन रूप में व्याख्या की।

मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त : नकद लेन-देन दृष्टिकोण या फिशर का दृष्टिकोण
(QUANTITY THEORY OF MONEY : CASH TRANSACTION APPROACH OR FISHER'S APPROACH)

मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त यह बताता है कि मुद्रा का परिमाण ही कीमत स्तर अथवा मुद्रा के मूल्य का प्रमुख निर्धारक है। यदि मुद्रा के परिमाण में परिवर्तन होगा तो वह ठीक उसी अनुपात में कीमत स्तर में परिवर्तन ला देगा। सिद्धान्त यह स्पष्ट करता है कि मुद्रा की मात्रा तथा सामान्य कीमत स्तर में आनुपातिक सम्बन्ध होता है। मुद्रा के परिमाण में वृद्धि सामान्य कीमत स्तर में उसी अनुपात में वृद्धि करती है और तदनुरूप मुद्रा के मूल्य में कमी लाती है। इसके विपरीत, मुद्रा के परिमाण में कमी सामान्य कीमत स्तर में उसी अनुपात में कमी लाती है और तदनुरूप मूल्य में वृद्धि लाती है।

सिद्धान्त का कथन

1. **फिशर** (Irving Fisher) के शब्दों में, "यदि अन्य बातें अपरिवर्तित रहें तो, ज्यों-ज्यों मुद्रा संचय की मात्रा बढ़ती है त्यों-त्यों कीमत स्तर भी प्रत्यक्ष अनुपात में बढ़ता है और मुद्रा का मूल्य घटता जाता है और विलोमशः भी।" यदि मुद्रा की मात्रा दुगनी कर दी जाए तो कीमत स्तर भी दुगना हो जाएगा और मुद्रा का मूल्य आधा रह जाएगा। इसके विपरीत, यदि मुद्रा की मात्रा घटा कर आधी कर दी जाए तो कीमत स्तर भी गिरकर आधा रह जाएगा और मुद्रा का मूल्य दुगना हो जाएगा।

2. **प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों** ने मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त को स्पष्ट करते हुए बताया कि **मुद्रा की मात्रा तथा मूल्य के बीच विपरीत आनुपातिक सम्बन्ध होता है।** अन्य बातें समान रहने पर मुद्रा की मात्रा दुगनी होने पर उसका मूल्य आधा अथवा मात्रा आधी होने पर मूल्य दुगना हो जाएगा।

3. **जॉन स्टुअर्ट मिल** (J. S. Mill) के अनुसार, "यदि अन्य बातें यथावत् रहें तो मुद्रा के मूल्य में इसके परिमाण के विपरीत दिशा में परिवर्तन होते हैं। परिमाण की प्रत्येक वृद्धि मूल्य को उसी अनुपात में घटाती है और परिमाण की प्रत्येक कमी उसी अनुपात में बढ़ाती है।"[1]

4. **टॉसिग** (Taussig) के अनुसार, "यदि अन्य बातें समान रहें, और मुद्रा की मात्रा दुगनी कर दी जाए तो कीमत भी पहले की तुलना में दुगुनी हो जाएगी और मुद्रा का मूल्य पहले की तुलना में आधा रह जाएगा और अन्य बातें समान रहें तो मुद्रा की मात्रा को आधा करने पर कीमतें पहले की अपेक्षा आधी रह जाएंगी और मुद्रा का मूल्य पहले की तुलना में दुगना हो जाएगा।"[2]

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि **मुद्रा के परिमाण तथा मुद्रा के मूल्य में विपरीत आनुपातिक सम्बन्ध होता है तथा मुद्रा के परिमाण तथा कीमत स्तर में सीधा आनुपातिक सम्बन्ध होता है।** परन्तु मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त निम्नलिखित मान्यताओं के अन्तर्गत ही कार्यशील होता है :

मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त की मान्यताएं

(1) व्यापार की मात्रा अथवा मुद्रा की मांग में कोई परिवर्तन नहीं होता।

(2) वस्तु-विनिमय के द्वारा सम्पन्न होने वाले सौदों में कोई परिवर्तन नहीं होता।

---

1 "The value of money, other things being the same, varies inversely as its quantity, every increase of quantity lowers the value and every diminution raising it in a ratio exactly equivalent."
—J. S. Mill : *Principles of Political Economy*, Vol. II, p. 15.

2 "Double the quantity of money, and other things being equal, prices will be twice as high as before and value of money one-half of the quantity of money and other things being equal, prices will be one-half of what they were before and the value of money double."
—Taussig : *Principles of Economics*, p. 298.

(3) साख मुद्रा तथा विधिग्राह्य मुद्रा के अनुपात में कोई परिवर्तन नहीं होता।
(4) मुद्रा की चलन गति अपरिवर्तित रहती है।

मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त का समीकरण
(EQUATION OF THE QUANTITY THEORY OF MONEY)

मुद्रा के परिमाण में परिवर्तन के फलस्वरूप कीमत-स्तर में होने वाले परिवर्तन को समीकरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इस समीकरण के स्वरूप में समय-समय पर परिवर्तन होता रहा है। इर्विंग फिशर द्वारा इस सम्बन्ध में प्रतिपादित समीकरण अधिक प्रसिद्ध है।

समीकरण का प्रारम्भिक स्वरूप निम्नवत था :

(1) $P = \frac{M}{T}$ जहां M = देश में प्रचलित मुद्रा की मात्रा, T = देश में वस्तुओं एवं सेवाओं की मात्रा, तथा P = वस्तुओं एवं सेवाओं का सामान्य मूल्य स्तर।

इस सूत्र में T को स्थिर मान लिया जाता है। सूत्रानुसार, मुद्रा के परिमाण तथा मूल्य स्तर में सीधा और आनुपातिक सम्बन्ध होता है। इस समीकरण को अधूरा माना गया, क्योंकि इसमें मुद्रा की चलन गति को सम्मिलित नहीं किया गया था।

(2) मुद्रा की चलन गति को सम्मिलित कर लेने के बाद समीकरण का स्वरूप हो गया :

$$P = \frac{MV}{T} \text{ अथवा } PT = MV$$

यहां V से अभिप्राय मुद्रा की चलन गति से है।

उपर्युक्त सूत्र में साख मुद्रा और उसकी चलन गति को सम्मिलित नहीं किया गया है जबकि साख-मुद्रा भी विनिमय के माध्यम का कार्य करती है।

(3) **फिशर का समीकरण**—प्रसिद्ध अमरीकी अर्थशास्त्री इरविंग फिशर (Irving Fisher) ने उपर्युक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए परिमाण समीकरण को निम्न रूप में प्रस्तुत किया :

$$PT = MV + M'V'$$

या

$$P = \frac{MV + M'V'}{T}$$

उपरोक्त समीकरण में,

M = चलन में मुद्रा की कुल मात्रा,
V = मुद्रा का प्रचलन वेग,
M′ = साख मुद्रा की मात्रा (Credit Instruments)
V′ = साख मुद्रा का प्रचलन वेग,
T = प्रचलन में कुल वस्तुओं एवं सेवाओं की मात्रा अथवा मुद्रा द्वारा किया गया लेन-देन
P = सामान्य कीमत स्तर अथवा 1/P = मुद्रा का मूल्य

इस समीकरण के अनुसार मुद्रा की मांग (PT) मुद्रा की पूर्ति (MV + M′ + V′) के बराबर होती है। लेन-देनों का कुल परिमाण गुणा कीमत स्तर अर्थात PT मुद्रा की कुल मांग को व्यक्त करता है। फिशर के अनुसार, $PT = \Sigma PQ$. अन्य शब्दों में, समुदाय (Σ) द्वारा खरीदी गई कुल मात्रा (Q) को कीमत स्तर से गुणा करने पर मुद्रा की कुल मांग प्राप्त होती है। यह समुदाय में मुद्रा की कुल पूर्ति के बारबर होती है जो कि वास्तविक मुद्रा की मात्रा (M) गुणा उसके चलन वेग (V) जमा साख मुद्रा की कुल मात्रा (M′) गुणा उसके चलन वेग V′ के बराबर होती है। इस तरह, एक वर्ष में क्रयों के कुल मूल्य (PT) को MV + M′ V′ द्वारा आंका जाता है। इस तरह विनिमय समीकरण है :

$$PT = MV + M'V'$$

कीमत स्तर पर मुद्रा का प्रभाव अथवा मुद्रा का मूल्य ज्ञात करने के लिए हम उक्त समीकरण निम्नवत लिख सकते हैं :

$$P = MV + \frac{M'V'}{T}$$